IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

मन्नू भंडारी की कहानियों में स्वावलंबी स्त्री

Santosh kanwar bithu

Teacher level - 1 Government Senior Secondary school. Chanadasar ,

Block - Kolayat , Bikaner. Rajasthan

सार

हिंदी कथा-साहित्य में मन्नू भंडारी का नाम उन रचनाकारों में लिया जाता है जिन्होंने स्त्री की अस्मिता, आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन को अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कहानियों में स्त्री केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करती हुई, अपने अस्तित्व और अधिकारों को स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील नजर आती है। मन्नू भंडारी की नायिकाएँ पारंपरिक समाज की रूढ़ियों और बंधनों को तोड़ते हुए आत्मनिर्भर बनने का साहस दिखाती हैं। वे आर्थिक और मानसिक रूप से स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम उठाती हैं, चाहे वह नौकरी करके जीवन यापन करना हो या फिर पारिवारिक व सामाजिक दवाबों के सामने अपनी स्वतंत्र सोच बनाए रखना। उनके कथानक में स्त्री किसी "आश्रित" रूप में नहीं बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का साहस करती हैं, चाहे वह विवाह, प्रेम या करियर से जुड़ा हो। मन्नू भंडारी ने यह दर्शाया कि स्वावलंबन केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि भावनात्मक और बौद्धिक स्तर पर भी आवश्यक है। इस प्रकार, मन्नू भंडारी की कहानियाँ एक ऐसे समाज की झलक देती हैं जहाँ स्त्री धीरे-धीरे परंपरागत बंधनों से मुक्त होकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और स्वावलंबी व्यक्तित्व के रूप में उभर रही है। यही उनकी रचनाओं का मूल सार है।

मुख्य शब्दः *मन्नू भंडारी, कहानियों, स्त्री*

परिचय

हिंदी साहित्य की प्रगतिशील धारा में मन्नू भंडारी एक ऐसा नाम है, जिन्होंने स्त्री की स्थिति, उसकी जिजीविषा और आत्मनिर्भरता को अत्यंत यथार्थ रूप में चित्रित किया। उन्होंने जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों को पकड़कर समाज में स्त्री की बदलती भूमिका और उसकी संघर्षशील मानसिकता को उकेरा। मन्नू भंडारी की रचनाएँ विशेष रूप से स्त्री-पुरुष संबंधों, पारिवारिक संरचना और सामाजिक मान्यताओं की पड़ताल करती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री अब केवल घर-गृहस्थी तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अपने जीवन और निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती है। वे स्त्रियाँ आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र चिंतन की दिशा में अग्रसर होती हैं। यही कारण है कि मन्नू भंडारी की नायिकाएँ हिंदी साहित्य में "स्वावलंबी स्त्री" की प्रतिनिधि बनकर उभरती हैं। इस प्रकार, मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों के माध्यम से न केवल स्त्रियों की यथार्थ स्थिति को सामने रखा, बल्कि उन्हें समाज में स्वावलंबन और समानता की दिशा में प्रेरित भी किया।

मन्नू भंडारी (जन्म: 1931 – निधन: 2021) नई कहानी आंदोलन की सशक्त हस्ताक्षर थीं। उनकी रचनाएँ उस दौर में सामने आईं जब भारतीय समाज परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व से गुजर रहा था। इस सामाजिक संक्रमणकाल में स्त्री के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी – अपनी पहचान और स्वायत्तता स्थापित करना। मन्नू भंडारी ने इस चुनौती को अपने साहित्य का केन्द्रीय विषय बनाया। उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्रियाँ केवल करुणा और त्याग की

Copyright@ijaer.org

प्रतिमूर्ति नहीं बल्कि संघर्षशील, आत्मसम्मानी और स्वावलंबी रूप में सामने आती हैं। वे परंपरागत "आश्रित" छवि को तोड़कर अपने अधिकारों और अस्तित्व के लिए खड़ी होती हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाओं को हिंदी साहित्य में नारी-विमर्श की नींव रखने वालों में गिना जाता है। मन्नू भंडारी की कहानियों में 'यही सच है', 'त्रिशंकु', 'आखिरी अँधेरा', 'संपूर्ण कहानियाँ' आदि संकलनों के अंतर्गत ऐसी स्त्रियाँ मिलती हैं जो सामाजिक बंधनों के बावजूद आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाती हैं। चाहे प्रेम और विवाह में अपनी स्वतंत्रता का दावा करना हो या फिर नौकरी कर जीवन को सँवारना—ये नायिकाएँ आत्मनिर्भरता की मिसाल बनती हैं। उनकी कहानियों में चित्रित स्त्रियाँ यह सिद्ध करती हैं कि स्वावलंबन केवल आर्थिक स्थिति से नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता, भावनात्मक सशक्तिकरण और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार मन्नू भंडारी की कहानियाँ हिंदी साहित्य में स्त्री की बदलती छवि और उसके स्वावलंबी स्वरूप का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

मन्नू भंडारी की कहानियों का साहित्यिक महत्व इस बात में निहित है कि उन्होंने स्त्री के जीवन को केवल भावनाओं और संवेदनाओं की दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया। उनकी नायिकाएँ यह स्पष्ट संदेश देती हैं कि स्त्री का अस्तित्व केवल परिवार या पुरुष पर आश्रित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे स्वयं के श्रम, संकल्प और निर्णय से अपने जीवन की दिशा तय करनी चाहिए।

'एक बार और कहानी' की नायिका दो राहों के बीच खड़ी नजर आती है। वह जिससे प्रेम करती है उसके अलावा किसी अन्य व्यक्ति को अपना नहीं पाती, और यही उसके जीवन की त्रासदी का मुख्य कारण बनता है। बिन्नी के कुंज के साथ लगभग 14 वर्षों तक संबंध रहे हैं या फिर कहें की बिन्नी के जीवन और अस्तित्व को कुंज ने ही संवारा था। बिन्नी कुंज के प्रति पूर्णरूप से समर्पित थी और ऐसी दशा में यदि कुंजी किसी और से शादी कर ले तो बिन्नी की अवस्था क्या होगी, इसे हम भलीभांति समझ सकते हैं। वही कुंज बिन्नी की बजाय मधु से शादी कर लेता है। इस वजह से बिन्नी को काफी बड़ा धक्का लगता है वह अंदर से टूट जाती है। उसे अपने-आप को संभालना मुश्किल हो जाता है।

कुंज का विवाह होने के पश्चात भी उनमें आपसी संबंध रहते हैं लेकिन उस संबंध में कोई स्थायित्व नहीं रहता। बिन्नी के अंतर्मन में केवल कुंज की तस्वीर बसी हुई थी वह अन्य पुरुषों को भी कुंज के सांचे में ढाल कर देखती थी। जिंदगी उसके लिए बोझ बन चुकी थी। वह ना तो छूटी हुई जिंदगी को जी पा रही थी और ना ही आगे आने वाली जिंदगी को। उन दोनों के बीच प्रेम नहीं बल्कि एक औपचारिकता शेष रह गई थी जिसमें खालीपन के अलावा कुछ भी नहीं था। यह बात बिन्नी महसूस भी कर रही थी जिसे निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं- "जो कोमल तन्तु उन दोनों को वर्षों से बांधे चला आ रहा था आज जैसे वह टूट गया है उन दोनों के बीच 'कुछ' था जो मर गया है। टूटने-मरने का यह बोध रात में और भी गहरा हो गया था जब दो लाशों की तरह वे साथ सोए थे।"

किसी प्रकार बिन्नी पुरानी जिंदगी को दरकिनार कर आगे बढ़ने की कोशिश करती है। इसके लिए वह नंदन नामक युवक से प्रेम संबंध स्थापित भी करती है लेकिन बिन्नी के मन-मंदिर में तो कुंज की मूर्ति बसी हुई है वह यहां भी असफल रह जाती है। बिन्नी को नंदन अच्छा लगता था, उसे पसंद भी करती थी लेकिन उन दोनों के बीच आकर्षण और काम के अलावा कुछ नहीं था। बिन्नी नंदन के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करना चाहती थी परंतु उसे कुंज की जगह नहीं दे पाती है। कुंज के साथ रहे संबंध ने बिन्नी के मस्तिष्क को बेसुध कर रखा है जिस वजह से उसकी जिंदगी दो राहों के बीच आकर खड़ी हो जाती है जहां से उसका जीवन उलझ जाता है और वह अकेली रह जाती है। दुख, वेदना और कसक उसके जीवन के पर्याय बन जाते हैं। उसका जीवन धीरे-धीरे क्षीण होने लगता है। वेदना और टीस की यही कथा कहानी में दर्ज है। अन्ततः कहा जा सकता है कि- 'आत्मपरक व्यक्ति की द ि ने परिवार तथा समाज के आदर्शों तथा

नैतिक मूल्यों को ही नहीं चोट पहुंचाई अपितु अपने-आप को भी खो बैठा है। उसमें समझ की न सही दिशा ही रह गई है और ना उचित सिद्धांत।

'क्षय कहानी की नायिका 'कुंती' कामकाजी और आत्मनिर्भर नारी है। वह विषम से विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती है लेकिन परिवार के दायित्व का भार उठाते-उठाते वह टूट जाती है। कुंती के परिवार की आर्थिक अवस्था अत्यंत दयनीय है, अतः कह सकते हैं कि घर-परिवार की पूरी जिम्मेदारी अकेले कुंती पर ही है। उसके मन में भी अन्य युवतियों की भांति मस्ती और शरारत करने की इच्छा विद्यमान है किंतु वह अपनी इच्छाओं को परिवार के लिए होम कर देती है। कुंती की मां की मृत्यु हो चुकी है एवं उसके पिता भी क्षय रोग से पीड़ित हैं। पिता के साथ-साथ भाई की पढ़ाई-लिखाई का खर्च भी उसके सिर पर है। घर-परिवार की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, अपने कार्यभार के अतिरिक्त वह सावित्री को ट्यूशन पढ़ाने का काम भी करने लगती है। परिवार के वहन का दायित्व उसके लिए सहज नहीं रहता वह दिन-प्रतिदिन जिम्मेदारियों के बोझ के तले दबर्त जा रही थी। उसके अपने भी कुछ सपने इच्छाएं और आकाक्षाए थी लेकिन एक-एक करके वे सब लुप्त होते जा रहे थे। वह घुटन भरी जिंदगी को जीने के लिए मजबूर हो चुकी थी। वह बेबस थी पर इसके अलावा उसके पास कोई दूसरा विकल्प नह था। कुंती के आन्तरिक घुटन के संदर्भ में यही कहा जा सकत है कि एक ओर घर और बाहर का दुहरा बोझ है तो दूसरी ओर भविष्य की चिंता भी। वह स्वयं भी कुछ चाहती है उसके भी कुछ सपने कुछ आकांक्षाएं हैं इसे सोचने वाला कोई भी नहीं है। 5 वहा परिवार के लिए तो जी रही थी परंतु उसके लिए जीने वाला कोई नहीं था। वह खुद तो परिवार का सहारा बनती है लेकिन स्वयं बेसहारा हो जाती है। आर्थिक जिम्मेदारियों ने उसे पूर तरह से निचोड़कर कर रख दिया था। उसे महसूस हो रहा था कि परिवार का उत्तरदायित्व निभाते निभाते वह स्वयं क्षय का शिकार होने लगी है। वह अपने सपनों को त्याग परिवार की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती है पर उसका व्यक्तित्व कहीं-ना-कहीं धूमिल हो जाता है जिसे निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं- "आदर्श और आर्थिक दबावों की टकराहट में कुंती का व्यक्तित्व जिस तरह से टूटकर बिखरता है प्रस्तुत कहानी उसक एक करुणाजनक शिलालेख है।

'नई नौकरी कहानी की नायिका 'रमा' कामकाजी विवाहित नार है। वह कॉलेज में इतिहास की प्रध्यापिका है। वह विचारों से पूर्णताः स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर नारी है। रमा अपने व्यक्तित्व का विकास समाज में चाहती है लेकिन रमा का पति कुंदन उसे घ की पूरी जिम्मेदारियों में लिप्त रखना चाहता है। जिस वजह से रमा अध्यापन का कार्य सही ढंग से नहीं निभा पाती। वह घर और बाहर की जिम्मेदारियों के बीच फंसकर रह जाती है। वह इन दोनों कार्यों के बीच सामंजस्य नहीं बैठा पाती है जिसके कारन वह हताश और निराश हो जाती है। उसकी स्थिति के संदर्भ में हम यही कह सकते हैं कि- 'पत्नी को दोहरी क्या तिहरी भूमिका जब निभानी पड़ती है पत्नी मां और कामकाज नारी तब तालमेल बड़ी मुश्किल से बैठता है। घर और बाहर का उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभाने की होड़ में उसके अंतर्मन में संघर्ष और तनाव पैदा होता है।"

अंततः रमा नौकरी छोड़ देती है पर उसके जीवन में एक खालीपन आ जाता है जो उसे निगलता जाता है। नौकरी छोड़ने के पश्चात भी रमा का मन घर के कामकाज में पूरी तरह से नहीं लग पाता। रमा अपने खालीपन को कुंदन के प्रेम से भरने की कोशिश करती है पर उसे कुंदन से वह प्रेम नहीं मिलता है जिसके लिए उसने नौकरी से इस्तीफा दिया था। उसे लगता है कि कुंदन प्रेम तो करता है पर वह अपनी मान-प्रतिष्ठा के आगे उसके व्यक्तित्व को महत्त्व नहीं देता। उसे महसूस होने लगा था कि उसकी अस्मिता और व्यक्तित्व से कुंदन को कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। कुंदन के इस व्यवहार से वह ऊब चुकी थी। उसके अन्तर्मन में तनाव और निराशा का भाव उत्पन्न हो चुका था। वह धीरे-धीरे शोषितों की अवस्था तक पहुंचती जा रही थी। उसके अंतर्मन में नौकरी छोड़ने का मलाल अंत तक बना रहता है। रमा के व्यक्तित्व के धूमिल हो जाने और उसके अंतर्मन की पीड़ा का भाव कहानी में सर्वत्र देखने के मिलता

है। वह कुंदन के सम्मुख स्वयं को समर्पित करके भी खुशी प्राप्त नहीं कर पाती है जिसके लिए उसने इतना बड़ा त्याग किया था।

'दीवार बच्चे और बरसात कहानी की नायिका आधुनिक विचारों से लैस शिक्षित नारी है। उसका आधुनिक होना ही उसके पति के साथ तालमेल न बैठने का मुख्य कारण बनता है। वह आधुनिक विचारों को आत्मसात कर जीवन जीने का प्रयास करती है। वह पति के चरणों में समर्पित पारंपरिक नारी नहीं अपितु नवचेतना से युक्त मुक्त होकर जीने वाली नारी है। वह अपने ऊपर किसी भी प्रकार का सामाजिक बंधन स्वीकार नहीं करना चाहती। जब उसे लगता है कि उसका पति उसकी स्वतंत्रता पर आक्षेप लगाता है तब वह उसका विरोध करती है। इस वजह से उन दोनों के बीच हमेशा नोक-झोक होती रहती है। इस कारन वे दोनों एक साथ रहते हुए भी अजनबियों की तरह व्यवहार करते हैं।

कहानी की नायिका दकियानूसी परंपराओं में सिमटकर नहीं रहना चाहती है। वह पति के व्यक्तित्व में सिमटकर अपना व्यक्तित्व खंडित करना नहीं चाहती। वह अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता सत्ता के प्रति पूर्णरूप से सचेत है। वह पुरानी पारंपरिक रूढ़ियों के विरोध में अपनी आवाज बुलंद करती है। वह आधुनिक विचारों से युक्त होकर अपनी बातों का स्पीकरण देते हुए कहती है कि-"गलती करूंगी तो सौ बार माफी मांग लूंगी पर जिसे मैं गलती समझू ही नहीं उसके लिए क्यों माफी मांगू? आज माफी मांग लूं। और कल फिर वह करूं, इससे क्या फायदा ड़ हम दोनों का साथ निभ न सके तो साथ रहने का क्या फायदा? इसी खटपट के कारण वह घर का चौखट लांघ देती है पर पति की अधीनता स्वीकार नहीं करती।

नायिका अपने पति की मानसिकता को परख लेती है कि पुरुष व पति केवल नारी को उपभोग की वस्तु ही समझता है। वह सदैव यही चाहता है कि नारी सामाजिक दायरों में सिमट कर रहे उन्हें नारियों की अस्मिता और अस्तित्व से कोई मतलब नहीं होता। नवचेतना से युक्त नारियों को समाज में अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें रास्ते के हर चौराहे पर संघर्ष के लिए अकेला ही खड़ा होना पड़ता है। फिर भी आधुनिक चेतना से युक्त नारियां सामाजिक कुरीतियों और पुरुषवादी वर्चस्व के खिलाफ लोहा लेने के लिए तत्पर दिखाई पड़ती हैं जैसा कि इस कहानी में स्प है। वर्तमान समय में भी नवजागृत नारियों को अनेकों यंत्रनाओं से होकर गुजरना पड़ता है।

'रानी मां का चबूतरा कहानी की नायिका गुलाबी भी अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक है। वह स्वाभिमानी नारी है। वह किसी भी विषम परिस्थिति में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करती है। उसकी आर्थिक स्थिति एकदम चरमरा जाती है फिर भी हार नहीं मानती। वह आर्थिक अभावों से जूझती हुई अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती है। गुलाबी अपने शराबी पति से तंग आकर उसे बाहर का रास्ता दिखा देती है। इस प्रकार वह सामाजिक नियमों व बंधनों को खुलेआम चुनौती देती है। वह स्वयं अपने बच्चों और परिवार का दायित्व उठाती है। उसे मजदूरी का काम करता देख आस-पड़ोस के लोग उसपर तंज कसते थे लेकिन उसने कभी इन तानों की परवाह ही नहीं की। वह पूरे लगन और आत्मविश्वास के साथ अपने मार्ग पर आगे बढ़ती गई। जब गांव-समाज के लोग उसकी अवस्था पर तरस खाकर सहानुभूति दिखाने के लिए उसके बच्चों को चंदा इकट्ठा करके शिशु शिक्षा केंद्र में भर्ती कराने का प्रस्ताव लेकर उसके पास आते हैं तब वह कहती है कि "किसी के दान-पुन्न पर पलने वाली नहीं है गुलाबी थूकती है तुम्हारे चंदे पर।"

वह पूरी तरह से आत्मनिर्भर नारी है। वह समाज से किसी भी प्रकार की सहानुभूति की अपेक्षा नहीं रखती है। वह पढ़ी-लिखी नहीं है लेकिन सामाजिक ढोंग से भलीभांति परिचित है। वह जानती है कि यह समाज केवल झूठी सहानुभूति ही व्यक्त करता है। वह बेधड़क होकर अपनी और बच्चों की जिम्मेदारी उठाने के लिए सक्षम है। इस कहानी में गुलाबी अंधविश्वास का विरोध करती हुई भी दिखाई पड़ती है। वह शिक्षित न होने के बावजूद भी आधुनिक विचारों से युक्त नारी प्रतीत होती है।

नारी-विमर्श में योगदान

मन्नू भंडारी की रचनाएँ हिंदी साहित्य में नारी-विमर्श की आधारशिला मानी जाती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री-जीवन की जटिलताएँ, परिवार के भीतर उसकी उपेक्षा, समाज में उसके साथ होने वाला भेदभाव और सबसे महत्वपूर्ण— उसका प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने का साहस गहराई से चित्रित है। उन्होंने यह दिखाया कि स्त्री केवल पीड़ित या शोषित नहीं है, बल्कि वह परिवर्तन की धुरी भी बन सकती है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य

मन्नू भंडारी ने जिन स्त्रियों को अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया, वे सामान्य मध्यमवर्गीय परिवारों से आती हैं। यह वही वर्ग था जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच सबसे अधिक टकराव दिखाई देता है। इस वर्ग की स्त्रियाँ घर की सीमाओं से बाहर निकलकर शिक्षा और नौकरी के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने लगी थीं। मन्नू भंडारी ने इन्हीं स्त्रियों की आकांक्षाओं, संघर्षों और सफलताओं को अपनी कहानियों में स्थान दिया।

विषय-वस्तु की दृष्टि से

मन्नू भंडारी की कहानियों का केन्द्रीय विषय स्त्री का आत्मसंघर्ष और आत्मनिर्भरता है। उन्होंने नारी के जीवन को पारिवारिक बंधनों, सामाजिक रूढ़ियों और मानसिक द्वंद्वों के बीच उकेरा। उनकी कहानियों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि स्त्री अब केवल गृहस्थी तक सीमित न रहकर शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र निर्णय की ओर अग्रसर हो रही है।

चरित्र-चित्रण

उनकी नायिकाएँ जीवंत, यथार्थवादी और सामान्य मध्यमवर्गीय स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। 'यही सच है' की नायिका अपने प्रेम और जीवन के चुनाव को लेकर दृढ़ है, वहीं 'त्रिशंकु' में स्त्री अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए भी अपनी स्वतंत्रता और अस्मिता बचाए रखने का संघर्ष करती है।

शिल्प और शैली

मन्नू भंडारी की भाषा सरल, सहज और संप्रेषणीय है। वे दुरूहता से बचते हुए संवादात्मक शैली में कथा प्रस्तुत करती हैं। उनके कथ्य में आत्मकथात्मकता और मनोवैज्ञानिक गहराई भी मिलती है, जिससे उनकी कहानियाँ पाठक के हृदय में सीधा असर करती हैं।

नारी-विमर्श का दृष्टिकोण

मन्नू भंडारी नारी-विमर्श को केवल पुरुष-विरोध तक सीमित नहीं करतीं, बल्कि वह स्त्री की सकारात्मक भूमिका और उसकी आत्मनिर्भरता पर बल देती हैं। उनकी कहानियों की नारी अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए संघर्षरत रहती है और यथासंभव संतुलित दृष्टिकोण अपनाती है।

समकालीन संदर्भ

उनकी कहानियाँ 1960–1980 के उस दौर का प्रतिबिंब हैं, जब भारतीय समाज परंपरागत मूल्यों और आधुनिकता के बीच द्वंद्व से गुजर रहा था। इस संदर्भ में उनकी कहानियाँ स्त्री की बदलती स्थिति और उसकी चेतना को बहुत बारीकी से दर्शाती हैं।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी की कहानियाँ हिंदी साहित्य में स्त्री-जीवन की गहरी पड़ताल प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने यह दिखाया कि स्त्री केवल घर की चारदीवारी में सीमित रहने वाली प्राणी नहीं है, बल्कि वह अपने श्रम, संघर्ष और आत्मविश्वास के बल पर अपनी पहचान गढ़ सकती है। उनकी नायिकाएँ पारंपरिक आश्रित स्त्री की छवि से आगे बढ़कर स्वावलंबन, आत्मनिर्णय और स्वतंत्र चिंतन की प्रतीक बनती हैं। नई कहानी आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में मन्नू भंडारी ने न केवल स्त्री की सामाजिक स्थिति को रेखांकित किया, बल्कि उसे बदलने का रास्ता भी सुझाया। उनकी कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि सच्चे अर्थों में स्त्री की गरिमा तभी स्थापित हो सकती है, जब वह आर्थिक, मानसिक और भावनात्मक स्तर पर आत्मनिर्भर बने। इस प्रकार, निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य नारी-विमर्श की धारा में मील का पत्थर है। उनकी कहानियों की स्वावलंबी स्त्री न केवल समाज में स्त्री की बदलती छवि का दर्पण है, बल्कि आज की स्त्रियों के लिए प्रेरणा-स्रोत भी है।

संदर्भ सूची

[1] भंडारी, मन्नू. *यही सच है और अन्य कहानियाँ.* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971.

[2] भंडारी, मन्नू. *त्रिशंकु.* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995.

[3] भंडारी, मन्नू. *आखिरी अँधेरा.* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999.

[4] द्विवेदी, हजारीप्रसाद. *हिंदी साहित्य की भूमिका.* राजकमल प्रकाशन, 1961.

[5] मिश्र, नामवर. *कहानी नयी कहानी.* राजकमल प्रकाशन, 1974.

[6] द्विवेदी, मैनेजर पांडेय. *हिंदी कहानी और नारी विमर्श.* वाणी प्रकाशन, 2005.

[7] सिंह, रमेशचंद्र. *मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य.* भारतीय ज्ञानपीठ, 2012.

[8] वर्मा, शील. "नई कहानी आंदोलन और मन्नू भंडारी की कथाएँ." *हिंदी साहित्य समीक्षा पत्रिका,* खंड 22, अंक 3, 2015, पृ. 45–56.

[9] ठाकुर, सुधा. *हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017.

[10] शर्मा, कुसुम. "मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी का स्वावलंबी रूप." *समकालीन विचार,* अंक 14, 2019, पृ. 22–30.